# तमलिनाडु में लोहे का उत्खनन

## प्रलिम्सि के लयि:

लौह युग, पुरापाषाण युग, मध्यपाषाण युग, नवपाषाण युग, महापाषाण संस्कृति, कार्बन डेटगि

## मेन्स के लयि:

प्राचीन भारतीय सभ्यताएँ

## चर्चा में क्यों?

हाल ही में तमलिनाडु में हुए उत्खनन कार्य की कार्बन डेटगि से इस बात के प्रमाण मलि हैं कि भारत में लोहे का प्रयोग 4,200 साल पहले हुआ था।

- इससे पहले देश में लोहे के प्रयोग का प्रमाण 1900-2000 ईसा पूर्व और तमलिनाडु के लयि 1500 ईसा पूर्व माना जाता था।
- तमलिनाडु में लोहे के प्रयोग के नवीनतम साक्ष्य 2172 ईसा पूर्व के हैं।

## नषि्करष:

- यह उत्खनन तमलिनाडु में कृष्णागरी के पास मयलिादुम्पराई में हुआ है।
- मयलिादुम्पराई माइक्रोलथिकि (30,000 ईसा पूर्व) और प्रारंभकि ऐतहिासकि (600 ईसा पूर्व) युग के बीच की सांस्कृतकि सामग्री के साथ एक महत्त्वपूर्ण स्थल है।
- अन्य महत्त्वपूर्ण नषि्करषों में इस बात के प्रमाण मलि हैं कि तमलिनाडु में नवपाषाण चरण की शुरुआत 2200 ईसा पूर्व से पहले हुई। यह नषि्करष दनिांकति स्तर से नीचे पाए गए 25 सेमी ऊँचाई के सांस्कृतकि नक्षिेपों के अध्ययन पर आधारति है।
  - पुरातत्त्ववदिों ने यह भी पाया कि काले और लाल रंग के बर्तनों को नवपाषाण काल के अंत में ही पेश कयिा गया था न कि लौह युग में जैसाकि व्यापक रूप से यह माना जाता है।

## ऐतहिासकि महत्त्व:

- **कृषि उपकरणों का उत्पादन:**
  - लौह प्रौद्योगकिी के आवषि्कार से कृषि औज़ारों और हथयिारों का उत्पादन हुआ, जसिसे आर्थकि एवं सांस्कृतकि प्रगति से पहले एक सभ्यता हेतु आवश्यक उत्पादन संभव हुआ।
    - जहाँ तांबे का इस्तेमाल पहली बार भारतीयों (1500 ईसा पूर्व) द्वारा कयिा गया था वही सधिु घाटी में लोहे के इस्तेमाल होने के कोई ज्ञात रकिॉर्ड या साक्ष्य नहीं हैं।
- **वनों की कटाई में उपयोगी:**
  - वनों की कटाई तब हुई जब मानव ने घने जंगलों को साफ करने और कृषि कार्य हेतु भूमि को साफ करने के लयि लोहे के औज़ारों का उपयोग करना शुरू कयिा क्योंकि घने जंगलों को साफ करने और कृषि भूमि में तांबे के औज़ारों का उपयोग करना मुश्कलि होता।
- **सामाजकि-आर्थकि परवि्रतन:**
  - 1500 ईसा पूर्व से 2000 ईसा पूर्व तक के प्राप्त नवीनतम साक्ष्यों के आधार पर यह माना जा सकता है कि लौह युग का सांस्कृतकि उद्भव 2000 ईसा पूर्व में हुआ था।
  - लगभग 600 ईसा पूर्व लौह प्रौद्योगकिी ने बड़े पैमाने पर सामाजकि-आर्थकि परवि्रतनों का आधार नरि्मति कयिा जसिसे तमलि ब्राह्मी लपिि का वकिास हुआ।
    - माना जाता है कि तमलि ब्राह्मी लपियिों की उत्पत्ति लगभग 300 ईसा पूर्व हुई थी, लेकनि वर्ष 2019 में एक ऐतहिासकि खोज ने इस अवधि को 600 ईसा पूर्व नरि्धारति कर दयिा।
    - इस डेटगि या अवधि ने सधिु घाटी सभ्यता और तमलिगाम/दक्षणि भारत के संगम युग के बीच के अंतर को कम करने का कार्य कयिा।

## पाषाण युग

- **पेलियोलिथिक ( पाषाण काल) युग:**
  - मूल रूप से शिकार और भोजन एकत्र करने की संस्कृति।
  - पुरापाषाण काल के औज़ारों में नुकीले पत्थर, चॉपर, हाथ की कुल्हाड़ी, खुरचनी, भाला, धनुष और तीर आदि शामिल हैं तथा ये सामान्यतः हार्ड रॉक क्वार्टजाइट से बने होते हैं।
  - मध्य प्रदेश के भीमबेटका में पाए गए रॉक पेंटिंग एवं नक्काशी में शिकार को मुख्य जीवन निर्वाह गतिविधि के रूप में दर्शाते हैं।
  - भारत में पुरापाषाण काल को तीन चरणों में विभाजित किया गया है: प्रारंभिक या निम्न पुरापाषाण (50,0000-100,000 ईसा पूर्व), मध्य पुरापाषाण (100,000-40,000 ईसा पूर्व) और उत्तर पुरापाषाण (40,000-10,000 ईसा पूर्व)।
  - होमो सेपियन्स उत्तर पुरापाषाण युग में अपनी उपस्थिति दर्ज कराते हैं।
- **मेसोलिथिक (मध्य पाषाण) युग:**
  - प्लीस्टोसिन काल से होलोसीन काल में संक्रमण और जलवायु में अनुकूल परिवर्तनों द्वारा युग को चिह्नित किया गया है।
  - मेसोलिथिक युग के प्रारंभिक काल में शिकार, मछली पकड़ने और भोजन एकत्र करने जैसी गतिविधि होती थी।
  - इस युग में पशुओं का पालन-पोषण शुरू हुआ।
  - माइक्रोलिथ नामक उपकरण छोटे थे जिनकी ज्यामिति में पुरापाषाण युग की तुलना में सुधार हुआ था।
- **निओलिथिक (नव पाषाण) युग:**
  - पाषाण युग के अंतिम चरण के रूप में संदर्भित इस युग में खाद्य उत्पादन की शुरुआत हुई।
  - लंबे समय तक एक ही स्थान पर रहना,मिट्टी के बर्तनों का उपयोग और शिल्प का आविष्कार नवपाषाण युग की विशेषता है।
  - नवपाषाण काल के लोग पॉलिशदार पत्थर के औज़ारो एवं हथियारों का प्रयोग करते थे। इस काल के लोग विशेष रूप से पत्थर की बनी कुल्हाड़ियों का प्रयोग करते थे। नवपाषाण काल में हथौड़ा, छेनी एवं बसुली के प्रमाण भी प्राप्त हुए हैं।
- **मेगालिथिक (महापाषाण) संस्कृति:**
  - महापाषाण संस्कृति में पत्थर की संरचनाओं के साक्ष्य प्राप्त हुए हैं, जिनका निर्माण दफन स्थलों के रूप में या स्मारक स्थलों के रूप में किया गया था।
  - भारत में पुरातत्त्वविदों को लौह युग (1500 ईसा पूर्व से 500 ईसा पूर्व) में अधिकांश महापाषाण संस्कृतियों के साक्ष्य प्राप्त हुए हैं, हालाँकि कुछ साक्ष्यों से लौह युग पूर्व (2000 ईसा पूर्व ) भी इनकी उपस्थिति के प्रमाण मिलते हैं।
  - महापाषाण संस्कृति **संपूर्ण प्राचीन भारतीय उपमहाद्वीप में फैली हुई** है। हालाँकि उनमें से अधिकांश स्थल प्रायद्वीपीय भारत में पाए जाते हैं, जो महाराष्ट्र (मुख्य रूप से विदर्भ), कर्नाटक, तमिलनाडु, केरल, आंध्र प्रदेश और तेलंगाना राज्यों में केंद्रित हैं।

## स्रोत: इंडियन एक्सप्रेस

PDF Refernece URL: https://www.drishtiias.com/hindi/printpdf/excavations-of-iron-in-tamil-nadu